**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# अनदेखे सामाजिक यथार्थ को चिन्हित करती पवन करण की कविताएं

**विभा मलिक,** शोधार्थी, हिंदी साहित्य,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Corresponding Author**
**विभा मलिक,** शोधार्थी, हिंदी साहित्य,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/11/2020
Revised on : -----
Accepted on : 10/11/2020
Plagiarism : 0% on 04/11/2020

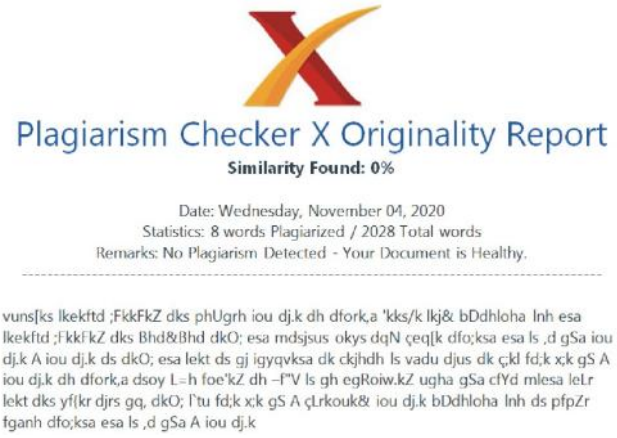
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Wednesday, November 04, 2020
Statistics: 8 words Plagiarized / 2028 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

vuns]ks lkekftd ;FkkFkZ dks phUgrh iou dj.k dh dfork,a 'kks/k lkj& bDdhloha lnh esa lkekftd ;FkkFkZ dks Bhd&Bhd dkO; esa mdsjsus okys dqN çeq[k dfo;ksa esa ls ,d gSa iou dj.k A iou dj.k ds dkO; esa lekt ds gj igyqvksa dk ckjhdh ls vadu djus dk ç;kl fd;k x;k gS A iou dj.k dh dfork,a dsoy L=h foe'kZ dh –f"V ls gh egRoiw.kZ ugha gSa cfYd mlesa leLr lekt dks yf(kr djrs gq, dkO; f'tu fd;k x;k gS A çLrkouk& iou dj.k bDdhloha lnh ds pfpZr fganh dfo;ksa esa ls ,d gSa A iou dj.k

## शोध सार

इक्कीसवीं सदी में सामाजिक यथार्थ को ठीक–ठीक काव्य में उकेरेने वाले कुछ प्रमुख कवियों में से एक हैं पवन करण। पवन करण के काव्य में समाज के हर पहलुओं का बारिकी से अंकन करने का प्रयास किया गया है। पवन करण की कविताएं केवल स्त्री विमर्श की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि उसमें समस्त समाज को लक्षित करते हुए काव्य सृजन किया गया है।

## मुख्य शब्द

सामाजिक यथार्थ, संवेदना, अंतर्मन।

## प्रस्तावना

पवन करण इक्कीसवीं सदी के चर्चित हिंदी कवियों में से एक हैं। पवन करण के अब तक सात कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं,'इस तरह मैं' (2000),'स्त्री मेरे भीतर' (2004), 'अस्पताल के बाहर टेलीफोन'(2009), 'कहना नहीं आता' (2012), 'कोट के बाजू पर बटन' (2013), 'स्त्री शतक' (2018), 'कल की थकान' (2018) आदि चर्चित काव्य संग्रह रहे हैं। 'पवन करण के काव्य को मुख्यतः स्त्री जीवन से जुड़े जरूरी प्रश्नों और मुद्दों के पैरोकार की दृष्टि से अधिक देखा जाता है।' 'स्त्री मेरे भीतर','कहना नहीं आता','स्त्री शतक' आदि काव्य संग्रहों में मुख्य रूप से स्त्री जीवन का यथार्थ बड़ी संजीदगी से बयां होता है। स्त्री मेरे भीतर काव्य संग्रह में 'प्यार में डूबी हुई माँ','बहन का प्रेमी','एक खूबसूरत बेटी का पिता','बुरका','एलबम','गुल्लक','स्त्री मेरे भीतर' आदि कविताएं समाज में स्त्री के सभी संबंधों जैसे माँ, बहन, बेटी, पत्नी आदि के जीवन के अनेक अनछुए पक्षों को शब्दबद्ध करने की ईमानदार कोशिश करती हैं। वहीं दूसरी ओर 'स्त्री शतक' काव्य संग्रह में उन पौराणिक, मिथकीय स्त्री पात्रों को केंद्र में रखकर कविता लिखी गयी है, जिन्हे इतिहास के पन्नों में या तो भुला ही दिया

गया अथवा वो स्थान नहीं मिला जो मिलना चाहिए था। इन पौराणिक आख्यानों के स्त्री पात्रों की मानसिक पीड़ा–कष्ट, प्रताड़ना, वेदना, सामाजिक स्थिति को बड़ी मार्मिकता एवं सूक्ष्मता के साथ कविता में उकेरा गया है जिस कारण ये कविताएं वर्षों से भारतीय समाज में चली आ रही रूढ़ियों, मान्यताओं, परम्पराओं पर एक बार फिर से सोचने को पाठक को मजबूर करती हैं। राम की बहन शांता, इंद्र की पुत्री जयंती, कृष्ण की पुत्री चारुमति, कृष्ण की बहन एकनंगा, बृहस्पति की पत्नी तारा, कश्यप मुनि की पत्नी दिति आदि अनेक पौराणिक पात्रों के मनोभावों का साक्षात्कार करने का प्रयास कवि ने किया है। इन सभी पात्रों की वेदना को ही कविता नहीं दिखाती बल्कि इनके प्रति एक नयी समझ विकसित करने की कोशिश भी कविता करती है। स्त्री मन के लगभग सभी कोनों की थाह लेने के बावजूद भी पवन करण के काव्य को केवल स्त्री जीवन के पक्षों से ही जोड़ना न्यायसंगत नहीं होगा इनके काव्य का वितान केवल स्त्री जीवन की सामाजिक मान्यताएं और उसकी घेराबंदी से निकलने की कोशिश ही नहीं है बल्कि स्त्री के साथ–साथ समाज का प्रत्येक पक्ष, जिसे अभी देखा जाना शेष है वह भी पवन करण के काव्य में जगह पाता है। पवन करण के काव्य में समाज के हर पहलुओं पर पैनी नजर और सूक्ष्म अन्वेषण दृष्टि दिखलाई पड़ती है।

पवन करण समाज में हमारे आस–पास घटित होने वाली घटनाओं, वस्तुओं को अपनी कविता का विषय बनाते हैं। बिना किसी घोषणा, नारेबाजी या दिखावे के पवन करण की कविता दैनंदिन जीवन के उन सभी अनदेखे पक्षों से पाठक का साक्षात्कार कराती हैं । 'दाढ़ी', 'कढ़ी', 'कोट के बाजू पर बटन', 'चम्मच', 'ढ़ोल', 'घुटने', 'सीवर लाइन', 'सरकारी पखाना घर', 'दूरबीन', 'नीम', 'कलारी', 'मधुमक्खियाँ', 'काठ', 'परदे', 'अंगूठा', 'नजरबट्टू', 'चूल्हा', 'देहरी', 'चाकू', 'कैंची', 'ताला', 'बिजली के खंबे', 'अमरूद', 'चना', 'टेम्पो', 'स्कूटर' आदि हमारे आस–पास के अनेक ऐसे विषय हैं जिन पर पवन करण कविता लिखते हैं। 'दूरबीन' पर कविता लिखते समय भी कवि दूरबीन का प्रयोग करते हुए आसमान में चांद–सितारे देखने की कल्पना नही करता या अन्य कोई प्राकृतिक सौंदर्य देखने या किसी की निगरानी नहीं करता, अपितु वह तो उससे घर के सामानों को देखता है, बाहर बगीचे मे पेड़ों को देखता है, जैसे कि वो सिमट आए हैं, बिल्कुल ही पास में और कवि दूरबीन से रसोई में काम करती अपनी पत्नी को निहारता है,

*"रसोई के दरवाजे पर खड़े होकर*
*खाना बनाती पत्नी को*
*इससे देखता हूँ तो वह*
*रसोई समेत बहुत दूर चली जाती है*
*दिखती और बहुत छोटी और प्यारी बहुत।"* [1]

संसार की वास्तविकता का द्योतक यह घर–परिवार ही है, कवि कविता रचते हुए भी इस वास्तविकता से, इस यथार्थ स्थिति से दूर नहीं भागता अपितु यहां कवि यथार्थ के धरातल पर रहकर ही कविता की जमीन तलाश करते हुए नजर आता है । 'चूल्हे' पर कविता लिखते हुए भी कवि इस समाज में किसी परिवार के लिए सम्मानित जीवन जीने के लिए 'चूल्हे' की महत्ता को बताना भी नहीं भूलते,

*"यह जब जलता है तब बुझते हैं/इसके बुझने पर, पेट जल उठते हैं*
*गृहणी और इसके बीच एक जरूरी रिश्ता/साफ–साफ देखा जा सकता है*
*इसमें आग और कोठरी में धान/हमेशा भरी रहे सभी चाहते हैं*
*इसका एक रहना बिरादरी में/घर की साख होती है*
*बंटना होता है/बंद मुट्ठी का खुल जाना।"* [2]

'नीम' जिस प्रकार वर्षों से हमारी सभ्यता का एक अहम हिस्सा रहा है, वर्षों से हमारे आस–पास ही हमारे समाज में इसकी उपस्थिति अवश्य रही है। नीम के दैनिक जीवन में विभिन्न उपयोगों पर भी कवि विचार करते हुए कहता हैं,

*"नीम पुकारो, नीम/दौड़ा चला आएगा/दांतों में बनकर दातौन*
*नीम को गाओ, नीम/निबौरी–सा टपकेगा/झूला झुलतीं सहेलियों की गोद में*
*नीम को ढूंढो, नीम/घुन से झुझता/अनाज के कोठार में मिलेगा*
*नीम को सोचो, नीम/तुम्हें अपने भीतर/हर हराता देगा दिखाई ।"* [3]

वास्तव में नीम केवल एक वृक्ष ही नहीं अपितु हमारे सामाजिक जीवन का इतना अहम हिस्सा हो गया है कि उसका अस्तित्व केवल बाहरी ही नहीं रहा बल्कि हमारे भीतर ही आत्मसात हो चुका है। हिंदी साहित्य में अशोक, कदंब, आम, कुटज, देवदार आदि वृक्षों पर तो साहित्य रचना हुई है पर 'सहजन के पेड़' पर कविता संभवतः प्रथम ही पवन करण ने लिखी है। 'सहजन का पेड़' कविता में सहजन का वृक्ष कभी भी पिता को निराश नहीं करता, किसी रिश्तेदार के यहां जाने से पहले पिता उस वृक्ष के आगे अपनी झोली फैला देते और वो कभी निराश नहीं करता,

*"पिता किसी से मिलने जाते तो अपने खाली हाथ*
*सहजन के सामने पसार देते*
*वह भी खुशी–खुशी उनकी साइकिल के*
*पिछले कैरियर में खुरस जाता*
*जब अपनी फलियों से लदकता जाता वह*
*मोहल्ले भर को न्योते देते जाकर।"* [4]

कुछ इसी तरह हमारे घर की देहरी, ताला, परदे, बीजना, गुल्लक आदि सभी को कविता के केंद्र में कवि ने स्थान दिया है। पवन करण काव्य रचना के लिए ऐसा विषय चुनते हैं, जो हमारे आस–पास होते हुए भी अंतर्मन को विस्मित करने के लिए काफी होता है। कविता के विषय के लिए कहीं दूर, प्रकृति की गोद में जाने, या किसी बड़ी घटना के घटने की आवश्यकता इनकी कविताओं में नहीं दिखलाई पड़ती है। रोजमर्रा के जीवन में घटित हो रही छोटी–छोटी क्रियाएं, जिन्हें सामान्यतः हम देखकर अनदेखा कर देते हैं, वो सभी क्रियाएं, घटनाएं, वस्तुएं यहां कविता में स्वर पाती हैं और बड़ी सजहता के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। अस्पताल के बाहर टेलीफोन बूथ को देखकर शायद कभी पूर्व में किसी ने यह सोचा होगा कि इस फोन में न जाने कितने लोगों के दुख–दर्द, पीड़ा, लाचारी या खुशी की आवाजें सिमटी हुई हैं। इलाज के लिए पैसे के अभाव में रिश्तेदारों से मदद मांगती लड़खड़ाती न जाने कितनी आवाजें इस यंत्र में कैद हो गई हैं। कहीं घर में किसी नए मेहमान के आने की खुशी में चहकती आवाजें इसमें अपना सुर घोल कर अपनी दुनिया में वापस लौट चुकी हैं, मगर ये टेलीफोन बूथ सभी बातों को अपने भीतर सहेजे हुए है। कवि शुक्र मनाता है उसका जिसने यहां अस्पताल के बाहर टेलीफोन बूथ लगाया, इस टेलीफोन बूथ के बहाने कवि इतने व्यक्तियों के जीवन के मार्मिक क्षणों का हिस्सेदार रहा कि उसका एक रागात्मक जुड़ाव इस स्थान से हो गया है, वह नहीं जाना चाहता है अपनी इस अस्पताल के बाहर की पहरेदारी की नौकरी से कहीं अन्य स्थान पर। टेलीफोन बूथ पर आने वाले हर व्यक्ति की परेशानी कवि को याद है, अस्पताल में दम तोड़ चुके जवान बेटे की लाश को गाँव ले जाने के लिए लाचार, अनपढ़, घबराया हुआ पिता टेलीफोन बूथ पर अपने गाँव का नाम बता कर गाँव वालों को बुलाने की जिद करता है,

*"एक बार तो ऐसी घटना हुई जिसे नहीं भूल सकूँगा जीवन भर*
*हॉस्पिटल से निकल कर एक ग्रामीण वृद्ध*
*बैठ गया टेलीफोन के सामने आकर*
*कहने लगा मेरा बेटा खत्म हो गया है*
*वो देखो सामने उसकी लाश रखी है*
*मेरे गाँव में जल्दी से टेलीफोन कर दो*
*वहाँ से लोग आ जाएंगे ले जाएंगे हमें*

*मैंने डरते–डरते उससे टेलीफोन नंबर पूछा तो उसने*
*मुझे अपने गाँव का नाम बता दिया*
*मैंने पूछा क्या गाँव में टेलीफोन है*
*उसने कहा मुझे नहीं पता आप तो बस फोन कर दो ।"* [5]

यह घटना कवि के मन में जितने गहरे पैठती है उतनी ही अधिक गहराई से यह पाठक के मन में भी टीस पैदा करती है। पाठक के समक्ष तुरंत ही ऐसे लाचार बूढ़े बाप की छवि उभर आती है, जो ऐसे दुख में रो भी नहीं सकता और जिसकी आँखों में बेटे की लाश को कंधा देने का लाचारी साफ दिखलाई पड़ती है। वहीं दूसरी ओर अस्पताल के पास ही भीख मांगते घूमते हुए बच्चे की घटना बताते हुए कवि कहता है,

*"उस लड़के के बारे में, मैं आपको जरूर बताना चाहूंगा*
*जिसे इस परिसर में सब जानते हैं*
*जो अक्सर भीख मांगता देता है दिखाई*
*बहुत दिन हुए जो कहीं आया नहीं नजर*
*जो इलाज करने आई अपनी माँ के साथ आया था*
*और माँ की मौत के बाद पागल होकर*
*यहीं का हो गया रहकर, उसे जब भी भीख में*
*एक रुपए का सिक्का मिलता*
*वह सीधे टेलीफोन बूथ चला आता*
*और अम्मा कितनी बीमार है कहकर अपने पापा को*
*फोन लगाने की जिद करता।"* [6]

पवन करण की कविता किसी ग्लानि या अपराधबोध में नहीं डालती हैं अपितु वो तो हमारे अन्तर्मन, हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन को प्रेरित करती हैं, 'पिता की आंखें', 'पिता का मकान', 'छिनाल', 'बड़ी बुआ', 'क्या मैं तुम्हें कुछ बदला हुआ नहीं लगा', 'दूल्हे के दोस्त', 'मुसलमान लड़के', 'बंटवारा' आदि ऐसी ही कविताएं हैं जो सहज ही हमारे भीतर कुछ बदल देती हैं और एक नया दृष्टिकोण विकसित करती हैं। कवि पिता के पैतृक मकान को अपना नहीं मानता अपितु अपने बलबूते कुछ करना, पाना चाहता है, वह कहता है,

*"मुझे यह बात तिलमिला देती है*
*जब कोई कहता है/इकलौते लड़के हो*
*जो कुछ भी है पिता का/सब तुम्हारा ही तो है*
*पिता का मकान मुझे/अपने मकान की तरह नहीं लगता*
*जो अपनी जिंदगी में/अपने हाथों एक बार*
*अपना घोंसला जरूर बनाता है/मैं उस पक्षी की तरह हूँ।"* [7]

पवन करण की कविताएं समाज की वर्षों से बने वर्जनाओं के घेरे को तोड़ती हैं। प्रेम को भी कवि यथार्थ की भूमि पर ही ले आते हैं। कोई आदर्श रूप या लैला मजनू के जैसा प्रेम के बलिदान का स्वरूप गढ़ने का कोई प्रयास इनकी कविताओं में नहीं दिखलाई पड़ता। वास्तविकता में जैसा आज के समय में प्रेम घटित हो रहा है बिल्कुल वैसा ही भाव कविता में उकेरा गया है, 'पिता की आँख में पराई औरत', 'अपने विवाह की तैयारी करती प्रेमिका', 'क्या मैं तुम्हें बदला हुआ सा नहीं लगा', 'उस भले आदमी के पास मैं अपना समय छोड़ आई हूँ' आदि कविता ऐसी ही हैं जो प्रेम के यथार्थ रूप को ही स्वीकार्यता देती हुई प्रतीत होती हैं, जिसमें कोई रोमानी कल्पना, साथ जीने मरने के कसमें–वादे, समर्पण भाव जैसी मान्यताएँ स्थापित न करते हुए उसे देह की सीमा से दूर रखने का कोई प्रयास कवि ने नहीं किया है। कविता की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए लिखा भी गया है कि, " 'कोट के बाजू

पर बटन' की भी कुछ कविताएं भद्रलोक के काव्य–वितान में छेद करते हुए प्रेम और देह के बीच खड़ी की गई झीनी, रोमांटिक चादर को किनारे सरकाती हैं।"[8]

## निष्कर्ष

कह सकते हैं कि पवन करण की कविताएं जीवन के यथार्थ को टटोलने की एक ईमानदार कोशिश है। पवन करण की कविताएं सहजता, धीमे से ही जीवन से जुड़े सभी पक्षों से रूबरू करवा देती हैं, जिन्हें पहले देखा ही नहीं गया था। इनकी कविताएं केवल समाज की वास्तविकता से ही परिचय नहीं कराती हैं, बल्कि समाज को एक नई दृष्टि से देखने के लिए गवाक्ष भी खोलती हैं। पवन करण की कविताएं शब्दों के मिथ्या चमत्कारपूर्ण प्रयोग से से बचते हुए साधारण शब्दों में, बिना लाग–लपेट के हमारी संवेदनाओं तक आसानी से पहुँच जाती हैं, और यही इनके काव्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता भी है।

## संदर्भ सूची

1. करण, पवन. (2009). *अस्पताल के बाहर टेलीफोन.* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन. पृ. 105।
2. करण, पवन. (2017). *इस तरह मैं.* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 62।
3. करण, पवन. (2017). *इस तरह मैं.* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 25।
4. करण, पवन. (2017). *इस तरह मैं.* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 60।
5. करण, पवन. (2009). *अस्पताल के बाहर टेलीफोन.* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन. पृ. 121–122।
6. करण, पवन. (2009). *अस्पताल के बाहर टेलीफोन.* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन. पृ. 122।
7. करण, पवन. (2017). *इस तरह मैं.* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 11।
8. करण, पवन. (2013). *कोट के बाजू पर बटन.* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. पुस्तक फ्लैप से।
9. करण, पवन. (2004). *स्त्री मेरे भीतर.* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
10. करण, पवन. (2018). *स्त्री शतक.* नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ।

********